॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-कवच-साधना

।। पूर्व-पीठिका – श्रीईश्वर उवाच ।।

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, कवचं सुन्दरी - प्रियम्।
रहस्याति-रहस्यं च, मन्त्र - रूपमिदं प्रिये! ।।

।। श्रीपार्वत्युवाच ।।

भगवन्! सर्व-लोकेश!, सर्व-लोकैक-वन्दित!।
गुह्याद्-गुह्य-तमं तत्त्वं, श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः।।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-कवच-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' वीजं । सौः 'स-क-ल-ह्रीं' शक्तिः। क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कीलकं। सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थं श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-कवच-स्तोत्र-पाठे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

ॐ श्री दक्षिणामूर्ति-ऋषये नमः–शिरसि, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः–मुखे, ॐ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै नमः–हृदि, ॐ ऐं'क-ए-ई-ल-ह्रीं'-बीजाय नमः–गुह्ये, ॐ सौः 'स-क-ल-ह्रीं'-शक्तये नमः–पादयोः, ॐ क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं'-कीलकाय नमः–सर्वाङ्गे, ॐ सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थं श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-कवच-स्तोत्र-पाठे विनियोगाय नमः–अञ्जलौ।

।। कर-न्यास ।।

ॐ ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सौः 'स-क-ल-ह्रीं' मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ सौः 'स-क-ल-ह्रीं' करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' हृदयाय नमः। ॐ क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' शिरसे स्वाहा। ॐ सौः 'स-क-ल-ह्रीं' शिखायै वषट्। ॐ ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' कवचाय हुम्। ॐ क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ सौः 'स-क-ल-ह्रीं' अस्त्राय फट्।

।। ध्यान ।।

स - कुंकुम - विलेपनामलिक - चुम्बि - कस्तूरिकाम्,
स-मन्द-हसितेक्षणां स-शर-चाप-पाशांकुशाम्।
अशेष - जन - मोहिनीमरुण - माल्य - भूषाम्बराम्,
जपा-कुसुम- भासुरां जप-विधौ स्मरेदम्बिकाम्।। १।।
चतुर्भुजे! चन्द्र-कलावतंसे!, कुचोन्नते! कुंकुम-राग-शोणे!।
पुण्ड्रेक्षु-पाशांकुश-पुष्प-वाण-हस्ते! नमस्ते जगदेक-मातः!।।२।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथिवी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिता- त्रिपुरा-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। मूल कवच-पाठ ।।

क-कारः पातु शीर्षं मे, ए-कारः पातु फालके।
ई-कारः पातु वक्त्रं मे, ल-कारः कूर्प-युग्मके।। १ ।।
ह्रीं-कारः पातु हृदयं, वाग्भवश्च सदाऽवतु।
ह-कारः पातु जठरं, स-कारो नाभि-देशके।। २ ।।
क-कारः पार्श्व-भागे च, ह-कारः पातु पृष्ठके।
ल-कारश्च नितम्बे मे, ह्रीं-कारः पातु मूलके।। ३ ।।
काम-राजः सदा पातु, जठरादि-प्रदेशके।
स-कारः पातु कट्यां मे, क-कारः पातु लिङ्गके।। ४ ।।
ल-कारो जानुनी पातु, ह्रीं-कारो जंघ-युग्मके।
शक्ति-बीजं सदा पातु, मूल-विद्या सदाऽवतु।। ५ ।।
त्रिपुरा मां सदा पातु, त्रिपुरेशी च सर्वदा।
त्रिपुरा सुन्दरी पातु, वसु-पत्रस्य देवता।। ६ ।।
त्रिपुरा - वासिनी पातु, त्रिपुरा-श्रीः सदाऽवतु।
त्रिपुरा मालिनी पातु, त्रिपुरा सिद्धिदाऽवतु।। ७ ।।

त्रिपुरा तथा पातु, पातु त्रिपुरा - भैरवी।
अणिमाद्यास्तथा पान्तु, ब्राह्म्याद्याः पान्तु मां सदा।। ८ ।।
नव-मुद्रास्तथा पान्तु, कामाकर्षणि-पूर्विकाः।
पान्तु मां षोडशारे तु, अनङ्ग-कुसुमादिकाः।। ९ ।।
पान्तु मामष्ट-पत्रेषु, सर्व-संक्षोभणादिकाः।
पान्तु चक्र-कोणेषु, सर्व-सिद्धि-प्रदायिकाः।। १०।।
पान्तु मां बाह्य-कोणेषु, मध्यादि-कोणके तथा।
सर्वज्ञाद्यास्तथा पान्तु, सर्वाभीष्ट-प्रपूरिकाः।। ११ ।।
वशिन्याद्यास्तथा पान्तु, वसु-पत्रस्य देवताः।
त्रिकोणस्यान्तरालेषु, पान्तु मामायुधानि च।। १२ ।।
कामेश्वर्यादिकाः पान्तु, त्रिकोणे कोण-संस्थिताः।
विन्दु-चक्रे तथा पातु, श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी।। १३ ।।

।। फल-श्रुति ।।

इदं श्रीकवचं नित्यं, त्रि-सन्ध्यं यः पठेन्नरः।
सर्व-सिद्धिमवाप्नोति, सर्वाभीष्ट-फल-प्रदम्।। १ ।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी कवचम् ।।

भगवती श्रीत्रिपुर-सुन्दरी

हे सूक्ष्म स्वरूपवाली भगवती श्रीत्रिपुर-सुन्दरी!
तीनों लोकों के सौन्दर्य-रूपी महा-समुद्र के मन्थन से उत्पन्न
अमृत के समान उज्ज्वल,
सहस्रों प्रातः-कालीन सूर्य तथा
ताजे खिले हुए जपा-पुष्पों के समान लाल रक्तवाली,
तीनों लोकों में प्रकाश-मय,
परा-पश्यन्ती-मध्यमा-वैखरी वाणीवाली,
तुम्हारी मूर्ति-मेरे हृदय में स्फुरित हो अर्थात्
मेरे मन में विराजे।

-महर्षि दुर्वासा

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी को नमस्कार॥

श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-कवच-साधना (हिन्दी-रूपान्तर)

श्रीपार्वती ने कहा–हे भगवन्! आप सब लोकों के ईश्वर हैं, सब लोकों द्वारा वन्दित हैं। मैं तत्त्व-ज्ञान देनेवाले गुप्त-से-गुप्त ज्ञान को सुनना चाहती हूँ।

श्रीईश्वर ने कहा–हे देवि! भगवती त्रिपुर-सुन्दरी को प्रसन्न करनेवाला **'कवच'** बताऊँगा, जो मन्त्र-रूप है और रहस्यों का भी रहस्य है।

विनियोग–इस **श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी** के **कवच-स्तोत्र-रूपी मन्त्र** के ऋषि **श्रीदक्षिणामूर्ति**, छन्द **अनुष्टुप्**, देवता **श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी**, बीज **ऐं 'कएईलह्रीं'**, शक्ति **सौः 'सकलह्रीं'**, कीलक **क्लीं 'हसकहलह्रीं'** हैं और इसका विनियोग **सर्वाभीष्ट-सिद्धि** के लिए किया जाता है।

विनियोग के बाद **ऋष्यादि-न्यास** कर **मूल-मन्त्र** से **षडङ्ग-न्यास** करना चाहिए। तब **ध्यान** करना चाहिए। यथा–

जप करते समय **केसर-युक्त उबटनवाली**, जिनके मस्तक पर **कस्तूरी** लगी हुई है, **मन्द-हास्य-युक्त नेत्रोंवाली, धनुष, बाण, पाश** और **अंकुश** से युक्त, **सम्पूर्ण जनों को मोहित करनेवाली, लाल रङ्ग की पुष्प-माला** एवं **रक्त-वस्त्र धारण करनेवाली, जपा-पुष्प के समान आभावाली माता का स्मरण** करना चाहिए ।।१।।

हे **चतुर्भुजे**, हे **चन्द्र-कला-रूपी-कर्णाभूषणवाली**, उठे हुए स्तनोंवाली, केसर के रङ्ग के समान लाल रङ्गवाली, **इक्षु-धनुष, पाश, अंकुश** और **पुष्प-बाणों** को हाथों में रखनेवाली, **संसार का एक-मात्र पालन करनेवाली** आपको नमस्कार है ।।२।।

उक्त प्रकार से **ध्यान** करने के बाद **मानस-पूजन** कर **'कवच'** का पाठ करना चाहिए। यथा–

।। कवच-पाठ ।।

क-कार मेरे शिर की रक्षा करें, **ए-कार** सीमान्त-भाग की रक्षा करें। **ई-कार** मेरे मुख की रक्षा करें और **ल-कार** दोनों भौंहों की रक्षा करें ।। १ ।।

ह्रीं-कार हृदय की रक्षा करें और **वाग्भव** सदा रक्षा करें। **ह-कार** उदर की और **स-कार** नाभि की रक्षा करें ।। २ ।।

क-कार पार्श्व-भाग की तथा **ह-कार** पृष्ठ-भाग की रक्षा करें। **ल-कार** मेरे नितम्ब की तथा **ह्रीं-कार** मूल-स्थान की रक्षा करें ।। ३ ।।

काम-राज सदा उदरादि स्थानों की रक्षा करें। **स-कार** मेरे कटि-स्थान की रक्षा करें और **क-कार** लिङ्ग-स्थान की रक्षा करें ।। ४ ।।

ल-कार दोनों घुटनों की रक्षा करें और **ह्रीं-कार** जंघाओं की। **शक्ति-बीज** सदा रक्षा करें। **मूल-विद्या** सदा रक्षा करें ।। ५ ।।

त्रिपुरा और **त्रिपुरेशी** मेरी रक्षा करें। **अष्ट-दल की देवता त्रिपुरा-सुन्दरी** रक्षा करें ।।६।।

त्रिपुरा-वासिनी सदा रक्षा करें। **त्रिपुरा-श्री** सदा रक्षा करें। **त्रिपुरा-मालिनी** रक्षा करें। **त्रिपुरा-सिद्धिदा** रक्षा करें ।।७।।

त्रिपुराम्बा रक्षा करें और **त्रिपुर-भैरवी** रक्षा करें। **अणिमा** आदि रक्षा करें और **ब्राह्मी** आदि मेरी सदा रक्षा करें ।।८।।

उसी प्रकार **कामकर्षिणी** आदि **नव-मुद्राएँ** रक्षा करें। **अनङ्ग-कुसुमा** आदि **षोडशार** में मेरी रक्षा करें ।।९।।

सर्व-संक्षोभण आदि **अष्ट-दलों** में मेरी रक्षा करें, **सर्व-सिद्धि-प्रदायिका चक्र-कोणों** में मेरी रक्षा करें ।।१०।।

सम्पूर्ण मनोरथों को परिपूर्ण करनेवाली **सर्वज्ञा** आदि **बाह्य-कोणों** तथा **मध्यादि कोणों** में मेरी रक्षा करें ।।११।।

इसी प्रकार **अष्ट-दल की देवता वशिनी** आदि रक्षा करें और सभी **आयुध-त्रिकोण** के अन्तरालों में मेरी रक्षा करें ।।१२।।

कोणों में विराजमान कामेश्वरी-आदि त्रिकोण में रक्षा करें और इसी प्रकार **श्रीमत्- त्रिपुर-सुन्दरी बिन्दु-चक्र** में रक्षा करें ।।१३।।

।। फल-श्रुति ।।

समस्त मनो-वांछित फल को प्रदान करनेवाले उक्त **श्रीकवच** को जो व्यक्ति **तीनों सन्ध्याओं** में पढ़ता है, वह सारी सिद्धियों को प्राप्त करता है ।।१।।

त्रिपुरा

'त्रिपुरार्णव' के अनुसार **'त्रि'** का अर्थ है-**१ सुषुम्णा, २ पिङ्गला** और **३ इडा** नाड़ियों और **'पुर'** का अर्थ है-**१ मन, २ बुद्धि** और **३ चित्त**। अत: इनमें निवास करने से **'त्रिपुरा'** हैं।

'त्रिपुरा'-महा-शक्ति के लिए सभी बातें तीन-तीन हैं, अत: यह **'त्रिपुरा'** कहलाती हैं। **'मण्डल'**-त्रिकोण, **'भू-पुर'** भी तीन रेखाओंवाला, **'मन्त्र'** भी त्रि-अक्षर, त्रि-कूटवाला, **'रूप'** भी-१ ब्राह्मी, २ रौद्री और ३ वैष्णवी अथवा १ इच्छा-शक्ति, २ ज्ञान-शक्ति और ३ क्रिया-शक्ति, अथवा १ वामा, २ ज्येष्ठा और ३ रौद्री अथवा १ पश्यन्ती, २ मध्यमा और ३ वैखरी **तीन-तीन स्वरूपोंवाला** है।